कुल देवी-देवताओं तथा भैरव के पवित्र स्थल

भारतीय हिंदू समाज में पूर्वजों की पूजा-अर्चना एक निरंतर परम्परा रही है। दशोरा ब्राह्मण समाज भी परंपराओं का अनुसरण करते हुए किसी भी धार्मिक व शुभ कार्य का शुभारंभ अपने पूर्वजों तथा देवी-देवताओं का आशीर्वाद लेकर करते हैं। कुल देवता, कुलमाता, कुल देवी, सती माता तथा भैरव अलौकिक शक्ति के पूंज माने जाते हैं और इनके आशीर्वाद से जीवन सफल होता है, ऐसी रीत मानी जाती है। मध्यप्रदेश व राजस्थान के शहरों में दशोरा समाज के अनेक पवित्र स्थल हैं, जहां दशोरा परिवार पूजा-अर्चना करने से कभी नहीं चूकते हैं।

दशोरा ब्राह्मण, नागर तथा प्रशनोरा ब्राह्मण जाति से भिन्न हैं, यह विषय उन रूढ़िवादी व कर्मकांडी वर्ग के लिए वाद-विवाद का हो सकता है, जो जाति भेद, कुविचारों से ग्रसित होकर समाज में स्वयं को श्रेष्ठतम साबित करना चाहते हैं। आज केइस आधुनिक युग में जहां सर्वब्राह्मण संगठनों की रचना तथा मुख्य जाति के स्रोत में उपजातियों के संगम की बयार बह रही है, ऐसे में दशोरा ब्राह्मण नागर नहीं विषयक बेमानी नहीं हो जाता? अंगुलियां जब बंधती हैं तब मुट्ठी बनती है अर्थात सभी नागर जब एक सूत्र में बंधेंगे तब शक्ति व ऊर्जा का संचार नागरों में स्वचलित होगा। नागर ब्राह्मण जाति की सभी उपजातियां जैसे मेवाड़ नागर, बड़नगरा, विशनगरा, प्रश्नोत्तरा, कृष्णोरा, सांचोरा, प्रश्नोरा, दशोरा आदि को गर्व होना चाहिए कि वे एक ही वटवृक्ष की शाखाएं हैं जो शताब्दियों से नहीं स्कंद पुराण की रचना (नागर खण्ड) के वक्त से विराट बना हुआ है।

जातियों के विभाजन की प्रक्रिया आदिकाल से चली आ रही है तथा अनगिनत कारणों से हुए स्थानांतरणों के चलते कई उपजातियां मूल जाति से अलग होकर नए परिवेश की आबो-हवा, संस्कृति, वेशभूषा, भाषा, आचार-विचार, इत्यादि को अपनाती रही हैं और निसंदेह कालांतर में उन उपजातियों का उदय एक नए नाम से जाना जाने लगा है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह उपजाति अपने मूल जाति से भिन्न हो गई हैं। उदाहरण के लिए आज प्रत्येक समाज की संतानें विदेश जाकर बस रही हैं। जिनमें से कुछ प्रतिशत वहीं विवाह कर बस जाते हैं उनकी आने वाली पीढ़ी वहीं की होकर रह जाती हैं। आने वाले समय में पीढ़ी दर पीढ़ी यदि वहीं पर स्थापित होती हैं तो भी उनकी मूल जाति वही कहलाएगी जहां से उनका विदेश गमन हुआ है।

कहना उचित होगा कि नागरों को अपनी जाति के विषय में जो भी जानकारी मिली है, वह स्कंद पुराण के नागर खण्ड पर ही आधारित हैं। इसके लिए युगांतर में हुए परिवर्तनों व जाति विभाजनों के कई आधार रहे होंगे।

दशोरा ब्राह्मणों का सामाजिक संगठन तकरीबन 12वीं-13वीं शताब्दी के दौरान अस्तित्व में आया ऐसा माना जाता है। दशोरा हिन्दू दर्शन शास्त्र, धार्मिक, सांस्कृतिक, संस्कार के प्रकाण्ड ज्ञाता रहे हैं। सर्वमान्य तथ्य है कि दशोरा के पूर्वज नागर ब्राह्मण ही थे। नागर ब्राह्मण गुजरात प्रांत के जूनागढ़, समीप विशनगर में 10वीं शताब्दी में रहते-बसते थे और राज दरबार में सलाहकार के रूप में पदस्थ रहते थे। 532 ई में मध्यप्रदेश के मंदसौर के राजा यशोवर्मन ने प्रश्नोरा ब्राह्मणों को यज्ञ कराने के लिए आमंत्रित किया। राजा ने कुछ विद्वान पंडितों को मंदसौर में ही बस जाने की सलाह दी। प्रश्नोरा ब्राह्मण मंदसौर में बस गये व आगामी 800 वर्षों तक वहां के राजाओं के सलाहकार बने रहे। मंदसौर में सन् 1305 ई तक दशोरा ब्राह्मणों की पहचान प्रश्नोरा नागर जाति के रूप में थी।

दशोरा ब्राह्मण मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों-मंदसौर, धार, इंदौर, उज्जैन, खंडवा व खरगोन में बसे हैं तथा भगवान हाटकेश्वर के उपासक हैं। हाटकेश्वर महादेव का मंदिर बड़नगर, गुजरात में बना हुआ है तथा वर्तमान में उदयपुर में भी हाटकेश्वर मंदिर का निर्माण किया गया है।

तर्क शास्त्रियों तथा इतिहास शोधकर्ता भले ही जाति निर्माण व विच्छेद आदि पर तर्कसंगत तथ्य पेश करते हैं, परंतु कहना उचित होगा कि सभी नागर ब्राह्मण एक हैं। उपजातियां भले ही एक-दूसरों पर आक्षेप लगाती रहें, परंतु सच तो यह है कि वे सभी एक ही नागर की बूंदें हैं। दशोरा, प्रश्नोरा की जननी एक ही है वह है नागर जाति। आइए, जातिगत मानसिकता को परे कर नागर सूत्र के मोती बनने का संकल्प करें। हमें गर्व है कि हम नागर हैं।

▸ अखिलेश सू. जोशी

दशोरा ब्राह्मण समाज

प्रस्तुत है दशोरा ब्राह्मण समाज के पवित्र स्थलों की चित्रावली

महासती माता की पवित्र-मूर्तियां

(मंदसौर)

माना जाता है कि मंदसौर स्थित महासती माता की पवित्र मूर्तियां-1305 ईसवीं (1362 वि.सं.) में इसी स्थानपर हुई सती का स्मरण कराती हैं।

सती माता की पवित्र मूर्तियां

(रामपुरा)

रामपुरा में मिश्रा परिवार की कुल देवी स्थापित हैं।

कौशल्या, उपाध्याय, भट्ट परिवार की कुल देवी व भैरव

(नवाली तथा भानपुरा)

नवाली व भानपुरा में कौशल्या, उपाध्याय, भट्ट परिवारों की कुलदेवी तथा भैरव विराजमान हैं।

(भैरव, राजस्थान)

मिश्रा परिवार के भैरव चेचट, राजस्थान में पूजे जाते हैं।